E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

वेणीसंहार के प्रथम अंक का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

नान्दी पाठ के बाद नेपथ्य की ओर से सुनाई पड़ा कि व्यासादि महार्षियों के साथ भगवान् कृष्ण कौरव-पाण्डवों में सन्धि कराने के लिए दुर्योधन के पास जा रहे हैं। यह सुनकर सूत्रधार कहने लगा-भगवान् का यह प्रयास सफल होगा और पाण्डव प्रसन्न रहेंगे तथा कौरव भी स्वस्थ होंगे।

सूत्रधार की बात दुहराता हुआ भीम सहदेव के साथ क्रोध की मुद्रा में मंच पर पर आ जाता है और सूत्रधार को फटकारता है कि रे दुष्ट! जिन कौरवों ने लाक्षा निर्मित महल, विषमिश्रित भोजन तथा कपटद्युत (जुआ) रचाकर हम लोगों के प्राण और संपत्ति के अपहरण की चेष्टा करके महारानी द्रौपदी के वस्त्र तथा केशों को खींचा है, उन्हीं दुराचारी कौरवों की स्वस्थता की कामना तू कर रहा है? इसी समय सहदेव वहाँ आ जाता है। वह सूत्रधार के वचन का भीम के अनुकूल अर्थ बतलाकर उसे शान्त करना चाहता है। परन्तु भीम को विश्वास नहीं होता है कि युधिष्ठिर युद्ध करेंगे। अतएव वह सहदेव से अपना मत व्यक्त करता है कि चाहे जो कुछ हो, मैं तो युद्ध करके रहूँगा। यह कहकर वह आयुधागार की ओर जाना चाहता है पर पहुँचता है द्रौपदी के चतुःशाल के समीप। सहदेव उसका पीछा नहीं छोड़ता। द्रौपदी के चतुःशाल में पहुँचने पर सहदेव भीम से कहता है-यहाँ विराजमान हों और कृष्णा (द्रोपदी) के आगमन की प्रतीक्षा करें। कृष्णा नाम से भीम को स्मरण हो आया कि कृष्ण सन्धि कराने के लिए पाण्डवों की ओर से भेजे गये हैं। उसके पूछने पर सहदेव बताता है कि पाँच गाँव लेकर सन्धि कर ली जाय- यह पाण्डव-पक्ष का प्रस्ताव है। भीम युधिष्ठिर पर क्रुद्ध होता है। उधर से द्रौपदी भी रोती हुई आती है। वह कुछ दूर पर खड़ी होकर क्रुद्ध भीम की बातें सुनती है। सहदेव भीम को समझाता है कि युधिष्ठिर के सन्धि प्रस्ताव का व्यंग्य अर्थ है कि जिन पाँच गाँवों को माँगा जा रहा है उनमें से चार दुर्योधन के द्वारा पाण्डवों के विनाश-योजना की स्थली रहे हैं। इनसे सबको ज्ञात होगा

कि दुर्योधन पाण्डवों का अपकार करता जा रहा है, तब भी युधिष्ठिर कुल का नाश नहीं चाहते हैं और दुर्योधन सन्धि नहीं करना चाहता। भीम इन सब बातों से प्रभावित नहीं होता । वह द्रौपदी के विषय में पूछता है और वह सम्मुख आ जाती है।

भीम देखता है कि द्रौपदी उदास है। द्रौपदी की चेटी बताती है कि आज जब गान्धारी देवी का पादवन्दन करने के लिए देवी गई थीं तो मार्ग में दुर्योधन की पत्नी भानुमती मिल गई। उन्होंने देवी से कहा कि अब तो केश बाँधो। सम्प्रति पाण्डव पाँच गाँव ही मांग रहे हैं। मैंने ही उत्तर दिया कि जब तक आप लोगों की चोटी बँधी है तब तक देवी की चोटी कैसे बँधेगी? चेटी के इस उत्तर से प्रसन्न होकर भीम अपनी चञ्चल भुजाओं से गदाप्रहार द्वारा सुयोधन के उरुयुगल को चूर्ण करने तथा उसके रक्त से द्रौपदी के केशों को बँधाने की प्रतिज्ञा सुनाता है।

उसी समय कंचुकी आकर बताता है कि दुर्योधन ने सन्धि का प्रस्ताव लेकर गये हुए कृष्ण को बन्दी बनाना चाहा, पर भगवान् ने अपना विश्वरूप दिखाकर उसे हतप्रभ कर दिया।

इस घटना से कुपित होकर युधिष्ठिर ने कौरवों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है। रण-दुन्दुभि का शब्द सुनकर भीम प्रसन्न होता है। सहदेव और भी युद्धोचित पराक्रम का प्रदर्शन करने के लिए चल पड़ते हैं। द्रोपदी उनके मंगल की कामना करती है और भीम से कहती है कि आप युद्ध भूमि से लौटकर मुझे पुनः सान्त्वना दें तथा युद्ध में अपने शरीर की उपेक्षा न करें।